नश्तर से लिखी.....

डायरी; एक चिकित्सक की

विराट हास्पिस जबलपुर द्वारा प्रकाशित

नश्तर से लिखी.....

डायरी; एक चिकित्सक की

लेखक
डॉ. अखिलेश गुमाश्ता

सीनियर अस्थि रोग विशेषज्ञ एवं
मेडिकल डायरेक्टर, विराट हास्पिस
जबलपुर

विराट हास्पिस
दीक्षित एन्क्लेव, नर्मदा रोड
जबलपुर (मध्यप्रदेश)

एवं

ब्रह्मर्षि मिशन समिति
वनवासी चेतना आश्रम, जिलहरीघाट,
जबलपुर
द्वारा प्रकाशित

संपर्क :

+91 94258 01531
jaiviratjabalpur@gmail.com

+91 94251 68684
gumashta.akhilesh@gmail.com

मुद्रक:

.....

मूल्य: 50/-

समर्पित

हमारी संकल्प प्रेरणा
साध्वी ज्ञानेश्वरी दीदी

मेरी दीदी, उसकी दीदी
खून के रिश्ते, दर्द के रिश्ते
जाने वो किस-किस की दीदी।

भीगी आँखें, नजरें प्यासी,
बंजर मुस्कानों की उदासी,
कितने वीरां शुष्क मरू में,
उपवन 'ओएसिस' सी दीदी।।

अबोध शबरी भक्त शुद्ध सी,
गुरू बोध से तप्त बुद्ध सी,
'एक कुटुम्ब' के संत भाव में,
हँसते-हँसते सिसकी दीदी।

मेरी दीदी, उसकी दीदी
जाने वो किस-किस की दीदी।

प्राक्कथन

उन दिनों में यू.के. एम्बेसी में पदस्थ थी। सन् 2011 के बसन्त में मेरे भावी गुरूदेव के विलक्षण एवं आलौकिक प्रभामंडल से मेरा परिचय दो विभूतियों साध्वी ज्ञानेश्वरी दीदी एवं डॉ. अखिलेश गुमाश्ता के दर्शन से हुआ था। अल्प प्रवास पर वे लन्दन आए थे। डॉ. गुमाश्ता के चिकित्सक के रूप को जानने के पूर्व ही मुझे उनके सृजनात्मक रूप को जानने का अवसर मिला Ramayan; the Hymns of Himalaya में। राम-रसायन से अनुप्राणित उनका यह ग्रंथ 'हरि कथा अनंता' के दैवी विस्तार का एक अंश है।

हाल ही में उन्होनें फोन पर बताया कि विशेषतः विराट हास्पिस के अपने कुछ

संस्मरण लिपिबद्ध किये हैं, डायरी लेखन के रूप में। विराट हॉस्पिस के प्रति अपनी श्रद्धा के चलते मैने उन्हें कुछ अंश भेजने का आग्रह किया। जिन्हें मैं स्तब्ध एवं अवाक महसूस करते हुए एक सांस में पढ़ गई।

इन संस्मरणों को पढ़ते हुए पाठक स्वयं अपनी अनुभूतियों के दर्द का स्पर्श अनुभव करेंगे। इन्हें पढ़ते हुए मेरी यह धारणा दृढ़ होती गई कि इन संस्मरणों के लिपिबद्ध होने के पीछे कोई अदृश्य प्रेरणा शक्ति है जो दु:ख संतप्त प्राणियों के 'आर्तिनाशनम्' की विराट योजना के लिए लेखक की कलम को अपना माध्यम बना रही है।

. इस लघु संग्रह का एक-एक संस्मरण पाठकों की प्रसुप्त मानवीय संवेदनाओं को जगाने और उन्हें उद्दीप्त करने की सामर्थ्य रखता है। इनका बूँद सा लघु कलेवर पाठक

के हृदय में सेवा -प्रेम और करूणा की त्रिवेणी प्रवाहित कर देता है। एक साहित्यिक विधा के अंश मात्र ही न होकर दैवी स्फुलिंग है यह संस्मरण।

श्रीमती पद्मजा पाण्डेय
वर्तमान में
भारतीय विदेश सेवा दिल्ली
में कार्यरत

प्रथम पूजन

अत्यधिक आतुरता, सेवा के प्रति उत्साह। 15 दिन हो गये थे, हास्पिस को प्रारंभ हुए। एक भी रोगी नहीं आया था। चिन्ता की रेखाएं गहरा रही थीं एवं प्रकल्प के सिद्ध न होने की आशंका बलवती होती जा रही थी।

फिर अचानक एक दोपहर एक रोगी (सी.एल.) कृशकाय, बिस्तर पर लेटा दिखा। उसके परिवार की आँखें पथराई सी प्रतीत होती थीं किन्तु हमारी आँखें प्रथम रोगी के आने से चमक रहीं थीं। मैं उसके पास गया उसने आँखे खोली। मुझे लगा स्वयं विष्णु भगवान आ गये हैं, हमारी सेवा सिद्ध करने हेतु। मैने पूरे स्टाफ से नजर बचाकर उसके चरण छू लिये। मन ही मन मंत्रोच्चार किया शांताकारम् भुजग शयनम् पद्मनाभम्... शेष की शैया पर नहीं वह कर्क शैया पर सो रहा था। मैने अन्दर ही अन्दर कहा! 'कहाँ थे प्रभु? कितना इंतजार कराया।'

मैने उसके 'वाइटल्स' देखे किन्तु मैं उसे स्पर्श कर रहा था, मानो मैं स्वयं ईश्वर के किसी विग्रह को स्पर्श कर रहा हूँ। लंबी प्रतीक्षा के बाद जैसे संकल्प का फल मिला हो। सेलाईन की बाटल उसे दी जाती मुझे लगता अभिषेक कर रहे हैं। घाव की ड्रेसिंग जैसे चन्दन-रोली का लेप हो।

उसे गले का कैंसर था। बोलता था तो शब्द नहीं निकलते थे। फुसफुसाता था। काफी कष्ट में था।

फिर एक दिन फोन आया। मैं पहुँचा- सारी वेदना समाप्त हो चुकी थी-

विग्रह विसर्जन के लिये तैयार था।

भीड़ में तन्हा

क्योंकि वह अलग थलग बैठी थी, इसलिये मेरी नजर उसपर पड़ी।- काफी भीड़ थी प्लेटफार्म पर। युवा सौन्दर्य की इतनी उदास अभिव्यक्ति अटपटी लग रही थी।

वह पहिचानी हुई सी लगी, मैने अपनी बुद्धि पर जोर दिया, उसी समय उसने मुझे देखा- अभिवादन के लिए व्यावहारिक मुस्कान हेतु जैसे उसने पूरा जोर

लगा दिया किन्तु उसकी मुस्कान क्षणिक थी।

याद आया वो हमारे रोगी आर.जे. की मंगेतर ही थी। मैने तुषार लगी फसल को देखा था- मैने चन्द्रमा के ग्रहण को भी देखा था, मैने ग्रीष्म में तड़की जमीन भी सहज ही कई बार देखी थी किन्तु उसे देख मेरी भिंची मुठ्ठियाँ पसीज कर आँखों में उतर आई।

चहकती, चमकदार आँखों वाली लड़की जब हॉस्पिस आई उसे मालूम नहीं था कि उसका मंगेतर अब कुछ दिन का मेहमान है। तथ्यों का पता लगने पर भी वह आती रही।

आर.जे. को किसी ने बता दिया था कि वह ठीक हो जायेगा। आर.जे. ने बताया शादी की तैयारी थी कि घाव बन गये जाँघ में, असाध्य घाव। उसे बताया गया कि शादी कुछ माह बाद होगी।

मौसम बदलता गया। नया साल आ गया- शादी का मुहूर्त नहीं आया। मोबाईल पर इंतजार करता, फोन की घंटी बजते ही वह लपककर उठाता, फोन पर लम्बी बात करता अपनी मंगेतर से। फोन की बात मेरे कानों में भी पड़ी- 'शादी के कार्ड ज्यादा छपवाने पड़ेंगे, कितने सारे लोग मेरे दोस्त होते जा रहे हैं। डॉक्टर साहब भी तो आएंगे!'

उसके मरने के दो दिन पहले उसने राउण्ड के समय कहा, 'आज उसका मिस्ड काल था- कई बार उसने फोन किया मैने फोन नहीं उठाया' - मैं असमंजस में था कि आर.जे. को क्या उत्तर दूँ।

अचानक रेलवे प्लेटफार्म पर ट्रेन के आने की घोषणा होने लगी। प्लेटफार्म पर अफरा तफरी मच गई। मैं भी वर्तमान में लौट आया।

रेलवे प्लेटफार्म की भीड़ में वो कहीं खो गई। मैने ढूँढ़ा भी नहीं..... क्या बात करता उससे???

आईना

कोहराम मचा था वार्ड में, नर्स अपना पैर पकड़कर बैठी थी। उसके चेहरे पर दर्द झलक रहा था। फर्श पर खून के धब्बे दिख रहे थे, मुझे लगा किसी मरीज के घाव से खून बहा होगा। नर्स ने बताया उसका पैर काँच से कट गया है। मैने लापरवाही के लिए डाँटने का मौका नहीं गवाँया। कोई कुछ नहीं बोला, चुपचाप सुनते रहे।

गले के घाव की मरीज एस.डी. ने हंसते हुए बताया- 'मैने आईना फेंक दिया था, जो टूट गया और सिस्टर के पाँव में लग गया' और

वो जोर से हँसी। ऐसी हँसी को मेरा मनोवैज्ञानिक मन सफेद हँसी कहता है, इसमें कोई रंग नहीं था।

29 साल की एस.डी., ढाई वर्ष पहले शादी हुई थी, गाँव की सबसे सुन्दर दुल्हन... इतराती हुई पूरे गाँव में घर घर मिलने गई, अटारी वाली नानी, फूल वाली बऊ, बाखर के दद्दाजी सबका आशीर्वाद लिया। उसने बताया- सजने सवँरने पर माँ डाँटती - क्या अपने आप से बातें करती है? इतना आईना मत देखा कर! नजर लग जायेगी।

''मेरी सहेलियाँ मुझे संवारतीं, मेंहदी लगातीं, मैं अपनी छवि में ही मोहित रहती।'' एक गहरी साँस भर कर वह चुप हो गई, अतीत में खो गई। किसी ने कहा है बीता हुआ सुख भी वर्तमान को दुखः ही देता है।

मैं पूरी बात समझ गया। उसका चेहरा सूज गया था, ओंठ सूजे हुए थे, आँखें पलकों के बीच में एक पतली रेखा जैसी थीं, जिन्हें बड़े परिश्रम के बाद वह खोल पाती।

नर्स ने फुसफुसाकर कहा ''कई दिन से उसे आईना नहीं दिखाया था, आज उसने अपना चेहरा आईने में देखा और फोड़ दिया आईना।''

मैने अनुभव किया नर्स के चेहरे पर दर्द की जो झलक मैने देखी थी वह उसके पैर पर लगी चोट की नहीं थी।

अनिता

रामायण की पात्र अहिल्या जैसी पत्थर की मूर्ति। चपटे बाल, बड़ा कपाल, साँवली, सफेद साड़ी पहने ब्लेक एंड व्हाईट फिल्मों की सहनायिका जैसी। 'अनिता' नाम था उसका। शादी के बाद उसके पति ने त्याग दिया। भाई-भाभी ने इस बोझ से सरोकार ही नहीं रखा।

शरतचन्द्र होते तो कोई उपन्यास लिख जाता। किन्तु इस परित्यक्ता के भाग्य में निरर्थक जीवन

ही बदा था। आश्रम कैसे आई पता नहीं, शुष्क जीवन में कुछ कसर बाकी थी तो एक दिन कैंसर नें भी धर दबोचा। इलाज चला, आपरेशन का कष्ट झेलना पड़ा, जीवन के दर्दों की फेहरिस्त में एक दर्द और जुड़ गया।

आशा भरी निगाह से मुझे देखती! मैं उससे नजरें चुराता क्योंकि उसके केन्सर की तीसरी अवस्था थी। मेरा कन्सर्न सिर्फ इतना था कि वह आश्रम से आई थी।

आश्चर्य कि अंतिम पड़ाव के ऐसे मरीजों की कोई व्यवस्था पूरे शहर में नहीं थी। मेरे अस्पताल में कोने का एक बिस्तर चिन्हित किया गया। मैनें निर्देश दिये पल्स, बी.पी. दो-दो घंटे में रिकार्ड करो। इस.निरर्थक जीव की सांसों को रोज गिना जाने लगा। अन्य मरीजों को परेशानी होती उसके कराहने से।

एक सुबह अचानक उसका कराहना बन्द हो गया। सारे दर्दों से एक पल में मुक्ति।

मेरे संवेदनहीन मन को उस सुबह कुछ आर-पार चीर गया। अन्तिम पड़ाव के ऐसे मरीजों के लिये कोई अस्पताल क्यों नहीं है। जिसमें उनकी मृत्यु स्वाभिमान भरी हो - दीदी से चर्चा हुई, विराट हॉस्पिट के विचार की नींव पड़ी!

एक निरर्थक जीवन का अन्त कितना सार्थक हो गया।

एक और कर्ण

जबलपुर में रिक्शेवाले दो तरह के हैं, एक लोकल और दूसरे रीवा वाले। दोनों में अन्तर है। लोकल रिक्शे वाले शाम को कलारी में हाजिरी लगाते हैं। रात को केवल रीवा के रिक्शेवाले ही मिलते हैं, वे गुड़ चना ही खाते हैं, कम खाने, कम सोने के कारण चिड़चिड़े अधिक रहते हैं। दुर्भाग्य से मेरा भी कभी ऐसों से पाला पड़ ही जाता है।

आप कार चला रहे हों और अचानक सामने कोई रिक्शा आ जाये या रिक्शा स्टैण्ड में लड़ाई और मोटी-मोटी गालियों का आदान-प्रदान होता दिखे तो अनुमान लगा लेना 'ये वही हैं'। सड़क पर बेतरतीब खड़े रिक्शे, अराजक यातायात का सबसे बड़ा कारण। मैं तो यहाँ तक सोचता था कि जबलपुर का यातायात सुचारू नहीं होना फिर पेट्रोल डीजल की खपत अधिक होना और फिर रूपये की अन्तर्राष्ट्रीय कीमत का कम होना, भारत की अर्थव्यवस्था को कानपुर से लेकर जबलपुर तक के रीवा से आए रिक्शे वालों ने ही बिगाड़ दिया है। मेरी इस मान्यता पर मैं अर्थशास्त्रियों से बहस करने को भी तैयार था।

मेरे घर की परम्परा है कि अमावस-पूनों पर दान स्वरूप कुछ बाँटा जाता। मैने संवैधानिक चेतावनी दे रखी थी इन रीवा के अराजक रिक्शे वालों को कुछ भी न दिया जाये।

हमारा विराट हॉस्पिस का प्रोजेक्ट प्रारम्भ होने

को था। सुबह शाम दो तीन बार जाना होता था। दोपहर गर्म थी उस दिन और मेरी कार पंक्चर हो गयी। कार किनारे लगाकर में पैदल चलने को बढ़ा कि एक रिक्शा खड़ा हो गया। मै उसमे लद गया। रास्ते में उसकी भाषा से लगा कि वो रीवा से ही आया है। न जाने कितने पैसे मांगेगा, मोल-भाव करेगा? कितने ही प्रश्न कनपटी को और गर्म करने लगे।

हॉस्पिस के पास पहुँचकर उसने मेरी और देखा, मैं समझ गया अब मैं उसके दाँव-पेंच के लिये सजग हो रहा था। वो बोला आप यहाँ काम करते हैं? मेरे हाँ कहने पर उसने फिर पूछा कि यहाँ केन्सर के मरीजों की फ्री व्यवस्था है? मेरे लिये प्रश्न अनापेक्षित था। मैने सहमति में फिर सिर हिलाया और उसको देखने लगा। मैंने इस बीच पर्स निकाल लिया था, उसने भी अपनी जेब टटोली... कुछ सोचा और कुछ रूपये निकालकर मेरे हाथ में धर दिये, ''साहब! हम रीवा से है। हमारी माँ को कैंसर हो गया था। वह मर गई। हम जा न

सके थे। ससुरी बिना सेवा कराये चली गई। कहीं इस पैसे को भी लगा दीजियेगा''

मैने रूपये देखे। 20 रु. थे। जब तक ऊपर देखता, वह जा चुका था। इतनी गर्मी में एक ठंडी लहर मेरे जेहन में दौड़ गई। आज भी उसका चेहरा मुझे याद है, मैं उसे उन अराजक रिक्शे वालों के बीच ढूँढ़ता रहता हूँ।

चाह

मैं श्री आर एल के घर जानबूझ कर ठीक साढ़े पाँच बजे पहुँचा। उनकी पत्नी को केन्सर की अन्तिम अवस्था में कई दिन तक कोमा में रहना पड़ा, फिट्स भी आते थे। फीडिंग ट्यूब से खाना पानी चल रहा था।

ऐसी सेवा करते मैने आज तक किसी को नहीं देखा, विशेष रूप से मर्द को। आफिस से रोज जल्दी आ जाते। उनकी पत्नी को हमने दूसरी मंजिल पर रखा था। उन्होंने अनुरोध किया - इन्हें कूलर के सामने वाला बेड देना, मेरी पत्नी को गर्मी बहुत लगती है। हमने ऐसा ही किया। उनसे

किसी ने नहीं कहा कि कोमा में व्यक्ति संज्ञा शून्य अवचेतन अवस्था में रहता है। कभी दौड़ कर बताते- ''आज मैने हाथ छुआ तो उन्होने मेरा हाथ जोर से पकड़ लिया। डाक्टर साब ! सुधार हो रहा है न ?''

पत्नी के बिस्तर से सटे बैठे रहते। मुझे ऐसा लगता कि कोई प्रेमी युगल एक पल भी व्यर्थ न जाने देना चाहता हो ऐसा साथ। आपस में गुँटर-गूँ चल रही हो। उनकी पत्नी आंखे खोलती तो एकटक वे आँखों से बातें करते। जैसे दोनों की आँखों में ब्लू-टूथ लगे हों - डाटा ट्रान्सफर हो रहा हो, अभिव्यक्ति गुपचुप आदान-प्रदान हो रही है।

एक शाम मुझसे बात करते-करते उनकी निगाह घड़ी पर पड़ी- थर्मस लिये दौड़ कर वे पत्नी के पास पहुँच गए। नर्स को चाय दी फीडिंग ट्यूब से पिलाने के लिये। और स्वयं अपने कप में चाय उड़ेल कर पीने लगे। करीब 20 मिनिट बाद लौटे। मेरे पूछे बिना ही सफाई देने लगे- ''हम लोग ठीक साढ़े पाँच बजे साथ में चाय पीते हैं। वर्षों पुराना नियम है। दिन भर क्या हुआ बतियाने का यही समय रहता है, फिर

तो मैं अपने काम और वो...'', बोलते हुए रुक गये जैसे चाय अभी भी गले में अटकी हो।

उनकी पत्नी की मृत्यु के लगभग तीन माह के बाद मैं उनके घर गया– साढ़े पांच ही बजे थे, उनके हाथ में चाय का कप था, एक कप चाय सामने रखी थी– मुझे मालूम था वो चाय, किसके लिये रखी थी।

ब्रेव दीदी

उस समय पी.जी. कर रहा था मैं, मरीजो के दर्द रुटीन में नहीं आए थे, उस समय। तब हम मरीजों से अधिक बतियाते थे, कोई सुपीरियारिटी काम्प्लेक्स नहीं था। उस समय मरीजों से संवेदना एक पारिवारिक सदस्य होने जैसा अनुभव देता था, केन्सर से पहला साक्षात्कार भी तभी हुआ। अरुणा नाम की मरीज थी, उनके कई आपरेशन हुए, हाथ की हड्डी में एक ट्यूमर था और तब हमारे प्रोफेसर ने हाथ काटने की सलाह दी, उन्हें मैने कहा – 'अरुणा दीदी आपका हाथ काटना पड़ेगा', वे मुस्कुरा दी थीं।

मेरे लिये अप्रत्याशित था क्योंकि हाथ काटने

की बात पर इस तरह की प्रतिक्रिया पहली बार देखी थी। हम सब उन्हें ब्रेव दीदी कहने लगे।

उनके घर से टिफिन आता तो हम सब होस्टल के टाइप्ड लंच से ऊबे, भूखे जूनियर्स राउण्ड लेने पहुँच जाते और आग्रह के कच्चे हम सब मिलकर आधा टिफिन खाली कर देते।

जिस दिन आपरेशन था मेरे सिर पर उन्होंने आशीर्वाद दिया, इस हाथ से अब आशीर्वाद तुझे नहीं मिल पायेगा। वे फिर हंस दीं थीं। ओटी में ही मेरे एक साथी ने मेरे सिर पर वह कटा हुआ हाथ रख दिया, 'ले! ब्रेव दीदी का आशीर्वाद!' मैने उसे सिर पर ही रहने दिया- झेंप कर उसी ने मेरे सर से अलग भी कर दिया कटे हाथ को।

अरुणा दीदी कहाँ हैं? पता नहीं, उन्हें मेरी शक्ल भी याद नहीं होगी, किन्तु मेरे सिर पर रखे ब्रेव दीदी के हाथ का अहसास आज भी शक्ति प्रदान करता है।

सरस्वती

मैने भी अपने बच्चों से दादा की विरासत में मिले निर्देश दोहरा दिये-

आज बसंत पंचमी है। मेरे दादजी ने कहा था आज कुछ न कुछ अवश्य लिखो। आज सृजन का दिन है, सृजन ही सरस्वती माँ का पूजन है। शब्दों की आहूति माँ सरस्वती को प्रसन्न करती है। आज सरस्वती चिन्मयी है, आज सरस्वती वरदा हैं।

अचानक सरस्वती की याद आ गई। ना जाने किसने नाम रखा था सरस्वती ? जब हॉस्पिस में आई तब गुम-सुम सी बैठ गई। हस्ताक्षर करने की जगह उसका अंगूठा लगवाया गया। अनपढ़, बुद्धि से कमजोर, नाम था सरस्वती। कुछ पूछो तो आधी बात का उत्तर देते देते सरस्वती से माँ चंडिका हो जाती। सिर पकड़ कर जोर जोर से रोती- तेज दर्द होता उसके सिर में। सिर को दीवार से टकराती ऐसा लगता मानो सिर के ट्यूमर को स्वयं ही नष्ट कर देगी। उसकी माँ भी रोती रहती, ''बचपन से कम बुद्धि की है। भेजा तो बिलकुल नहीं है शुरू से। फिर भेजे में क्या पिराता है- कौन जाने ?''

जब दर्द से रोती तब सांत्वना के शब्दों से चुप भी हो जाती। संध्या प्रार्थना का अर्थ नहीं जानती परंतु प्रार्थना जल्दी ही रट गई उसे।

अन्य मरीजों की अपेक्षा इस सरस्वती से मैं कुछ ज्यादा ही बतियाता। दादा जी ने तो कहा ही था- शब्दों की आहूति से

सरस्वती प्रसन्न होती है।

आज शाम वो अचानक निढाल हो गई। वो मर चुकी थी आज ना ही वो रोई और ना उसकी माँ। आज सरस्वती चिन्मयी नहीं थी, मिन्मयी हो गई थी, किन्तु उसकी शांत चित्त देह सरस्वती माँ की वरदा छवि सी प्रतीत हो रही थी।

स्टॉफ ने हमेशा की तरह उसके मुँह में तुलसी और गंगाजल डाला, जाप की माला गले में डाली। मैंने ड्राइवर को दौड़ाया- जल्दी से एक फूलों की माला लेकर आओ, पीले फूलों की, जैसी बसंत पंचमी को लाया था।

टॉपर

मैं इसे लघु कथा नहीं लहु कथा कहूँगा। क्योंकि मैं इसे अपने लहू से लिखना चाहता था। यह कहानी अशोक की है, मेरे जिगरी दोस्त बचपन के साथी अशोक की। मेडिकल में साथ पढ़ते, साथ रहते, साथ खेलते, साथ ही कॉलेज के आंदोलनों में भाग लेते।

याद आया कि कालेज के एक प्रोफेसर के घेराव में हम सभी छात्रों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। जब कालेज प्रशासन ने कार्यवाही की तो सबसे पहला नाम अशोक का! लम्बा होने के कारण अलग दिखता। कॉलेज स्टाफ ने बयान दिया 'कोई हो न हो पर वो लम्बा वाला अशोक जरूर था।' प्रशासनिक कार्यवाही के निलम्बन आदेश में टॉप पर नाम था अशोक का।

लेकिन पढ़ाई और परीक्षा के रिजल्ट में भी वह अव्वल ही रहता। प्रथम सेमेस्टर से आखिरी सेमेस्टर तक प्रथम, प्रथम, सर्वप्रथम और मैरिट में हमेशा अव्वल रहा। एनाटॉमी से लेकर मेडिसिन तक पूरे बेच में सर्वोच्च अंक एवं टॉप रेंक। जैसे फर्स्ट आने के लिए ही बना हो।

म्यूजिकल नाइट में मैंने उससे भाग लेने कहा- उसने बताया मैं अपनी औकात जानता हूँ, मैं उस मंच पर नहीं जाता जहाँ अव्वल नहीं आऊँ।

वार्षिक स्पोर्ट्स में सिर्फ चम्मच दौड़ में भाग लेता, कांन्सनट्रेशन अच्छा था, वहाँ वह प्रथम आता, और किसी इवेन्ट में भाग नहीं लेता। पाँच हजार मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त, फाइनल ईयर के मेहते सर को अपना मैडल दिखाता और कहता मैं भी फर्स्ट आया हूँ।

कई अस्पतालों से उसे नियुक्तियाँ मिली पर वह अपने ग्रह जिले शहडोल में ही सरकारी नौकरी करता रहा। ''सर्वाधिक विश्वसनीय और अव्वल दर्जे का चिकित्सक है'' - जब भी कोई शहडोल का मिलता मैं

अशोक के बारे में राय लेता रहता।

एक सुबह भाभी का फोन आया, अशोक को ऑन ड्यूटी चक्कर आ गये थे। मैने तत्काल जबलपुर आने की सलाह दी। उसी दिन एमआरआई हुई- स्क्रीन पर जो दिखा मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। एक बड़ा सा ट्यूमर मेरी आँखों से घुसकर आत्मा तक हिला गया।

फिर वही सबकुछ। एक दुःस्वप्न अपने पैर पसारने लगा। बम्बई में सिर के ट्यूमर की सर्जरी हुई, वहीं से खबर भी आई एक और ट्यूमर पेट में निकला है। सिर का ट्यूमर तो पूर्ण ठीक हो गया, पर पेट के ट्यूमर को हमारी प्रगाढ़ दोस्ती हजम नहीं हो रही थी।

फिर अचानक खबर आई, जिसकी अशंका थी। हम बहुत से मित्र उसकी अंतिम यात्रा में शामिल होने चारों दिशाओं से दौड़ पड़े।

अंतिम चिता की अग्नि धधक रही थी, सभी बेचमेट्स चुपचाप बैठे थे। मैने सबसे कहा 'साला! यमराज की फेहरिस्त में भी टॉप कर गया।'

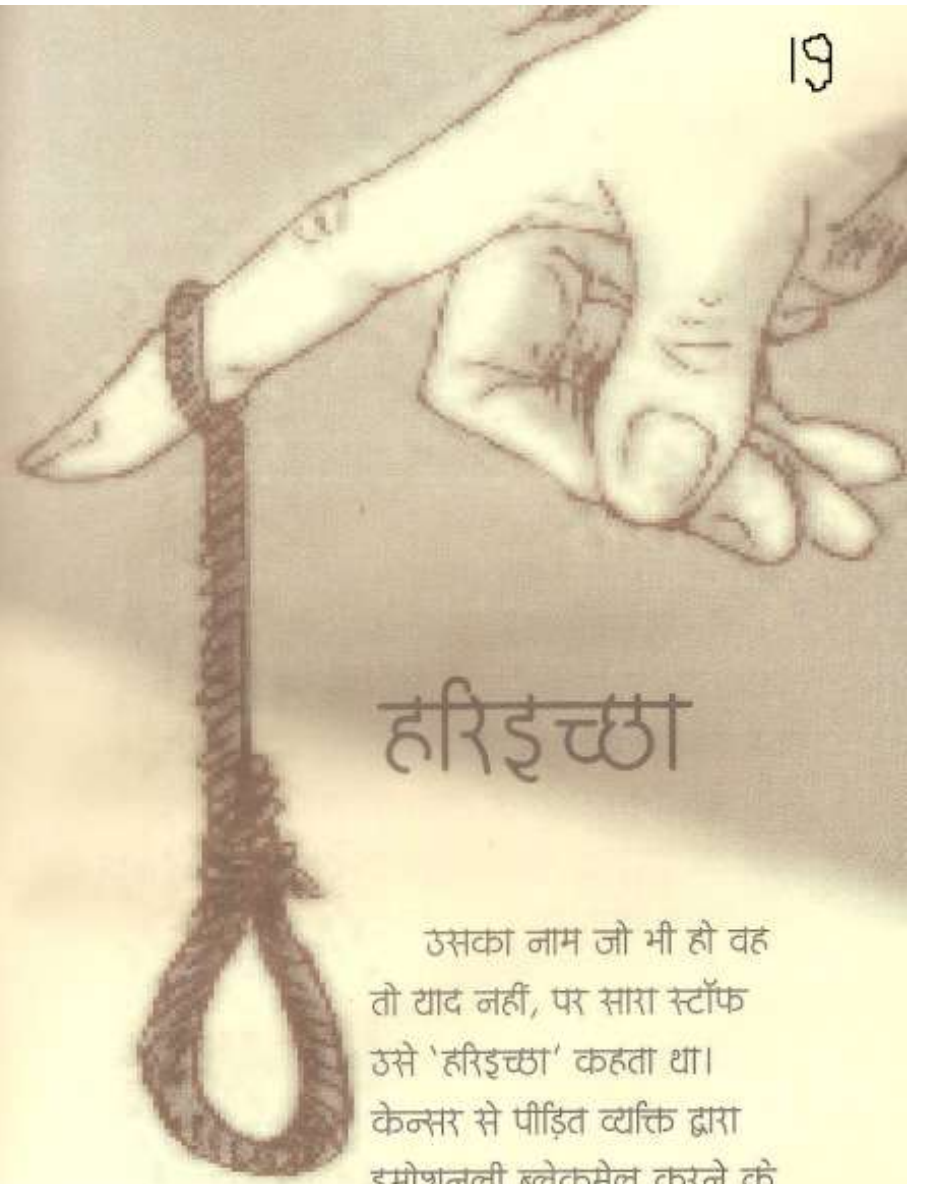

हरिइच्छा

उसका नाम जो भी हो वह तो याद नहीं, पर सारा स्टॉफ उसे 'हरिइच्छा' कहता था। केन्सर से पीड़ित व्यक्ति द्वारा इमोशनली ब्लेकमेल करने के गुर इनसे सीखे जा सकते हैं।

सुबह से एक दिन रसोई स्टाफ को बोला मुझे आभास हो रहा है कि 'मैं मरने वाला हूँ। मेरी अन्तिम इच्छा है कि मुझे हलुआ खाना है' घबराकर कुक ने मैनेजर को फोन किया। हलुआ बना उन्होंने पेट भर खाया। फिर तो आए दिन पुनः मृत्यु साक्षात् दर्शन देने लगी- जब कभी कुछ तर माल खाना हो उन्हें मृत्यु के साक्षात् दर्शन होते।

धीरे-धीरे सारा स्टाफ उनके इस अभिनय को समझ गया। हमारे निर्देश थे कि यदि स्वास्थ्य की हानि नहीं हो रही है तो मरीज की इच्छा को अंतिम इच्छा मानकर पूरा किया जाये। पूरे स्टॉफ ने उनकी इच्छा को हरिइच्छा मानकर पूरा करना प्रारंभ कर दिया और उनका नाम पड़ गया 'हरिइच्छा'।

पूरे हॉस्पिस के वे चहेते पात्र बन गये। सबको खुश रखते। मरीजों को समझाते रहते। ज्ञानियों की तरह प्रवचन देते, शिक्षक - अध्यापक की तरह अनुशासन रखते, भक्त की तरह सेवा भाव रखते, अनपढ़ की तरह ढीठ हो जाते और बच्चों की तरह मचलते, जिद करते, एक रूप के अनेक स्वरूप।

एक रात फोन आया, रात में ही हरिइच्छा को पपीता खाना है, वो फिर बोल रहे हैं, उनकी अंतिम इच्छा है कि पपीता खाना है। मैने स्टाफ से कहा 'उनसे कहो कि ऐसे मरीज आएंगे तो हम हास्पिस बंद कर देंगे'। मैने फोन रख दिया। दुकाने बंद थीं, मेरे घर में पपीता था ही नहीं। स्टाफ ने कहीं से दो चार परिचितों को फोन किया पपीते की व्यवस्था हुई। थोड़ी देर बाद मुझे फोन आया 'पपीते की व्यवस्था हो गई है -हरिइच्छा को खिला दिया है।'

अल सुबह फिर स्टॉफ का फोन आया ''हरिइच्छा की आज रात पपीता खाने की जिद नहीं थी सर! सही में...'' मैने बीच में ही टोंका ''कैसे हुआ, कब??'' उत्तर आया अभी अचानक!

मैने गहरी सांस ली 'हरिइच्छा'

केन्सर से फायदा

दीदी का फोन आया ''जल्दी आओ! आज तो लग ही नहीं रहा कि यह हास्पिस है। आज तो गाँव का कोई चौपाल लग रहा है, उत्सव हो रहा है यहाँ''। 15-20 मिनिट बाद जब पहुँचा तब भी वहाँ मढ़ई जैसा माहौल था। मुरारी तो नाच रहा था। सांस लेने में तकलीफ होती थी पर आज कोई भी तकलीफ नहीं थी।

हम भी तो यही चाहते हैं मार्फीन की जगह मरीज बरफी खाएं, कराह की जगह मल्हार गायें। अनिद्रा का रोग आज नहीं दिख रहा था बल्कि रतजगा हो रहा था। एक को देखकर दूसरा और

दूसरे को देखकर तीसरा सभी इकट्ठे हो गये प्रार्थना कक्ष में, और मजीरे और ढोलक पर भजन लोकगीत शुरू हो गये।

के.आर. पेट पकड़कर तड़पते हुए आये थे 7 दिन पहले। मेरे पहुँचते ही बोले ''आप मुस्कुराईये आप विराट हॉस्पिस में हैं।'' सपने जैसी बात किसी के चेहरे पर दर्द की लकीरें नहीं थीं- मुझे आर के की याद आई दौड़कर उसके बिस्तर तक पहुँचा, वह कोमा में था। मुट्ठियाँ बंद थीं, घुटने मुड़े थे उसकी यह डिसेलिब्रेट स्थिति भी आज सेलिब्रेट करती हुई लगी मुझे।

जूनियर डाक्टर ने मेरे सामने लोकल अखबार रख दिया। हास्पिस के प्रारंभ से हमने तय किया था कि किसी भी तरह की अखबारी खबर या रिपोर्ट कम से कम एक साल तक हम नहीं देंगे। एक वर्ष से अधिक हो गया था आज, एक बड़ी कवरेज

अखबार में आई थी, और लगभग सभी मरीजों की फोटो भी छपी थी। मौत की कगार के इन मरीजों के लिये बड़े उल्लास और स्वाभिमान का दिन था आज उसी का उत्सव हो रहा था।

मैने थोड़ी देर बाद फरमान जारी किया ''अब बहुत हो गया सब अपने-अपने बिस्तर पर चलें। दवा का समय हो गया है। '' सब चुपचाप चलने लगे। जैसे सुखद स्वप्न टूट गया हो, फिर वही दर्द भरी दुनिया।

पेट के केन्सर के मरीज के.आर. ने मुझे बुलाकर धीरे से बोला ''डॉक्टरसा! केन्सर होने का एक फायदा तो हुआ। वरना हमारी फोटो अखबार में कौन छापता?''

दुनिया कैसे चल रही है

रोज सुबह अखबार आता है दरवाजे पर जैसे पाप की गठरी पटक जाता है। पुण्य का लबादा ओढ़े लोग भी बेनकाब हो रहे हैं। सारा समाज शर्मसार है, अखबार की काली स्याही सारे समाज के चेहरे पर पुती हुई है। पण्डित जी बोले ''अब और ना चलिहे या दुनिया!'' मुझे भी लगा कैसे चलती होगी इन सब विकारों को ढोते हुए ये दुनिया?

हास्पिस के मरीजों के रिश्तेदार सामान्यतः मन से खिन्न और धन से विपन्न ही रहते हैं। हमने मरीजों के खाने रहने की व्यवस्था तो कर ली थी किन्तु कभी उनके रिश्तेदारों के बारे में नहीं सोचा। मरीजों की

व्यवस्था के साथ हमारे काम की इतिश्री। मरीज के रिश्तेदारों से कभी कुछ पूछा ही नहीं- ''कैसे हो? कोई समस्या है क्या?''

अचानक एक सुबह पहुँचा तो रिश्तेदार पोहा और चाय का मजा लेते मिले, मुझसे भी उन्होंने चाय के लिए पूछा, तब ध्यान आया कि यह व्यवस्था हास्पिस से तो नहीं हुई है, क्योंकि इसका प्रावधान करना बड़ा खर्चीला होता । मैने पूछा ये ''चाय नाश्ता कहाँ से आया?'' स्टाफ ने बताया कोई सुबह-सुबह आता है रोज गरम-गरम चाय और नाश्ता लेकर, मालूम नहीं कौन है? मरीज, सब रिश्तेदारों को जगाकर घर से बनी चाय और नाश्ता दे जाता है।

मेरी जिज्ञासा जागी इस अनजान 'ट्रेसपासर' में। मैने फिर कई बार सुबह सुबह आकर उससे मिलने की कोशिश की किन्तु मेरी कार आती देख वह गायब हो जाता।

एक दिन मैने चुपचाप आकर पकड़ ही लिया उसे। अपराध बोध से ग्रस्त वह खड़ा हो गया। वह आर.के. लक्ष्मण के कामन मेन की तरह दिख रहा था। रुआंसा जैसे मैं उसे अब सजा दूँगा। अन्दर ही अन्दर मैं कृतज्ञ था किन्तु कड़ी आवाज में मैने उसका नाम पूछा। उसने उत्तर दिया जैसे कोई थानेदार उसका पंचनामा बना रहा हो। ''मैं सरकारी कर्मचारी हूँ, नाम 'बैनर्जी' है। मुझे लगा रिश्तेदारों को कुछ दे सकूं तो मरीजों की देखभाल अच्छी तरह से कर सकेंगे। ''

मेरे ज्वलन्त प्रश्न का उत्तर, साक्षात् खड़ा था सांस लेता जीवंत - इतने सब विकारों को ढोते हुए दुनिया कैसे चल रही है?

विरासत

मेरी डायरी को नई खुराक मिलती ही रहती है। अब मेरे पुस्तैनी गांव से दादा आये हैं। गिनती करो तो चेहरे पर नब्बे झुर्रियां होंगी जो कि उनके जन्मदिन पर एक एक कर जुड़ती चली गई होंगी। मेरा नाम, उपनाम सुनकर उनकी झुर्रियां हिलोरे लेने लगीं। मेरे गांव का नाम लिया और पूछा 'क्या तुम कुंजीकक्का के नाती हो?' फिर बोले – तुम्हारे बब्बा ऐसे सत्यवादी रहे कि लोग पंचायत में उनके नाम की गठान धोती के छोर पर लगाते और वो सच बोलने की शपथ हो जाती। तुम्हारे बब्बा के नाम की गांठ लगी और गवाह हरिश

चन्दर बन जाता रहा।' मुंशी जी के 'पंचपरमेश्वर' कहानी के पन्ने मेरे सामने फड़फड़ाने लगे।

समय की अक्सर आपाधापी रहती है, मैं पुरखोंकी विरदावली बीच में छोड़ कर हॉस्पिस पहुँचा। शी के हाथ में सूजन और दर्द असहनीय हो रहा है – मैने कहा बस! पन्द्रह दिन में ठीक हो जायेगा। राम के मुंह से खून गिरा वह चिन्तित था। मैने कहा – ये सब गंदा खून है निकल जाने दो तभी ठीक होगे तुम।

अगले बिस्तर की अम्मा तीन माह से इन्तजार कर रही है – कोई घर से मिलने नहीं आया। उसको तसल्ली दी रोज ही तो फोन आता है तुम्हारे घर से। पूछते रहते हैं वे लोग चिन्ता करते रहते हैं। हमने ही आने से मना कर रखा है उन्हें। आर. जे. को मैने कहा – तुम्हारी शादी दिवाली के बाद ही होगी तब तक पूर्ण ठीक हो जाओंगे तुम। अगले बिस्तर पर नौ साल का ब्रेन केंसर का मरीज है 'कोमा' की स्थिति है। मां ने पूछा – मेरा बच्चा स्कूल कब जायेगा डाक्टरसा? मुझे याद नही

क्या उत्तर दिया पर वो खुश हो गई।

एस. के. माला जप रहा है - मैने उसे माला और मंतर दिया है उसे भ्रम है कि उसका घाव माला जपने से ठीक हो जायेगा मैने भी तो यही कहा था उनसे। दादा म. की गांठ फूट गई है गाल के बाहर घाव झांकने लगा है मैने खुशी दर्शायी अब तो यह गांठ गल कर पूरी ठीक होने वाली है। एक पुराने मरीज का हवाला भी दिया। उस दिन सात ही मरीज थे हॉस्पिस में। मेरा राण्ठड जल्दी पूरा हो गया।

आज राठण्ड पर मैने देखा पूरे बिस्तर भरे हुए हैं। नर्स ने बताया पन्द्रह मरीज हैं। आज मुझे पन्द्रह बार झूठ बोलने पड़ेंगे।

हे मेरे पुरखों! मेरे बब्बा ! मुझे माफ कर देना।

'दर्द का रिश्ता'

कई साल पहले एक फिल्म देखी थी 'दर्द का रिश्ता'। एक बहन-भाई की कहानी केंसर से पीड़ित एक नन्ही सी बहन का बचना। 'ज' भी मेरी बहन लगती थी। वैसे कभी भाई दूज का टीका उसने मुझे नहीं लगाया था, किन्तु उसे दूर की बहन लिखूं तो मेरे पेन की स्याही फीकी होने का डर लगता है। वैज्ञानिक भाषा में मेरा और उसके परिवार का डीएनए एक सा था। जिस दिन वह अस्पताल आई उसके गले में एक बड़ी गांठ हो गईथी - 'थर्ड स्टेज ऑफ केंसर'।

जीजा से बोला कि दो-तीन दिन में बम्बई जाना होगा किन्तु दो घंटे के अन्दर उन्होंने ट्रेन से बम्बई

जाने का फैसला किया।

उसके बड़े कुनबे के बहुत से लोग उसे छोड़ने स्टेशन गए। सब दुखी थे पर वो लेशमात्र भी दुखी नहीं थी। मैने जो कह दिया था जल्दी ही ठीक हो जाओगी। 'ट्रेन गरीब रथ' मैं बैठी वह मुझे सबसे गरीब लग रही थी। मेरी बात पर विश्वास ही उसकी पूंजी थी, मुझे मालूम था कि उसकी यही पूंजी खोटा सिक्का है।

फिर चला लम्बा संर्घष- उसका और उसके परिवार का। एक 'गुड़िया' की तरह उसके ससुराल वालो ने उसकी सेवा की। उसे तेज बुखार होने पर मैं कहता - बस अभी ठीक हो जायेगा। मुझे स्वयं आश्चर्य होता कि उसे फिर एक हफ्ते बुखार नहीं आता। हाथ के दर्द और सूजन से वह परेशान होती, मैं कहता दो दिन में दर्द ठीक हो जायेगा। मेरे प्रति उसका अटूट विश्वास - दर्द एक ही दिन में समाप्त हो गया।

एक दिन बोली ''भैया ! आपने कहा था दो साल में ठीक हो जायेगा। 16 सितम्बर को दो साल हो जायेंगे। मैंने उसके प्रश्न से पल्ला झाड़ा 'मैंने दो नहीं तीन साल कहा था पगली।' मुझे मामूल था अगला सितम्बर तो आना ही नहीं है। फिर अंतिम बार आई.सी.सी.यू. में भर्ती थी। किडनी काम करना बंद

हो गई थी, अर्ध बेहोश थी, कुछ बोल नहीं रही थी। मेरे पहुँचने पर उसने आँखें खोली। कुछ बोली नहीं, कुछ प्रश्न नहीं थे, न तो दर्द था उसकी आंखों में किन्तु वही विश्वास- भैया आ गये हैं, अब सब ठीक हो जायेगा।

आज बरसी थी उसकी। मैं उसके घर गया। घर मेहमानों से भरा था। उसकी फोटो पर भी बेतरतीब पुष्प मालाएँ चढ़ीं थी।

एक हारे हुए योद्धा की तरह मैने पुष्प अर्पण किये जैसे चिकित्सीय ज्ञान की सारी पुस्तकें, सारे सर्जीकल इंस्ट्रूमेंट, उन पुष्पों का रूप ले लिये हों। फोटो फ्रेम में उसकी विश्वास भरी आंखों के भंवर में गोते लगाता हुआ जब निकल कर बाहर आया तो

मेरे अन्दर का चिकित्सक और बाहर का आडंबरी लिबास वहीं छूट गया, बचा था सिर्फ एक अदद भाई - एक निरीह भाई।

कैक्टस

मार्च के माह में गर्मी एक दम बढ़ने लगती है। घर की बगिया के पौधे कुम्हलाने लगते हैं। माली की जरूरत उसी समय सबसे ज्यादा रहती है। राल्फ इमर्सन ने लिखा है घर के आंगन की धरती फूलों में मुस्कुराती है।

चौकीदार एक माली ले आया था। माली क्या था निराला का भिखारी ज्यादा दिख रहा था। साथ में उसकी बच्ची भी थी। मैने पूछा इसे क्यों लाये ? उसने कहा 'पत्नी मर गई केंसर से अब हम दो ही प्राणी हैं इसे कहाँ छोड़ते साब ?' केंसर से मरने की बात पर उससे सहानुभूति जितनी थी... सो थी, किन्तु कोई लघु कथा के कथानक मिलने की जिज्ञासा अधिक थी। इस बीच उसकी बच्ची भी बगिया में तितली की तरह इधर से उधर मंडराने लगी।

इस गर्मी में फूल ट्यूलिप, आर्किड, आइरिस, लिली आदि लगाना चाहते थे उसने जुबानी सब याद कर

लिया। किन्तु तुलसी के पौधे लाना वह भूल गया और कई तरह के कैक्टस अपने मन से उठा लाया। कुछ दिन बाद तुलसी कोट की सफाई करते हुए अपने मन की बात उसने मुझ से साझा की "मेरी घर वाली तुलसी की बहोत पूजा करती थी भगवान ने चीटिंग की हमारे साथ।" उस दिन वह तुलसी के पौधे क्यो नहीं लाया। मै समझ गया।

कैक्टस उसने बड़े करीने से लगाये थे, मुझे कैक्टस बिलकुल पसंद नही हैं। उसमें ना फूल, न तितली, ना हरियाली, ना खुशबू ऊपर से कांटे भी।

वो कैक्टस की सेवा बड़ी तन्मयता से करता। ना जाने क्यों उसे लिली ,ट्यूलिप, आर्किड आदि बिलकुल नहीं भाते। एक दिन मेरे पूछने पर वह बोला - 'इन सब पर तो भगवान की वैसे ही कृपा है वो सब सुन्दर हैं, खुशबूदार हैं, आकर्षक हैं। प्रकृति ने बहोत दिया है इन्हें पर बेचारे कैक्टस ताप में, धूप में, कांटो के बीच में भी सारी शक्ति बटोर कर किसी तरह एक फूल खिला देते हैं।

माली का फलसफा मुझे अटपटा किन्तु बिलकुल भिन्न लगा। उसने आगे बोला - साब ! हमारी जिन्दगी भी तो कैक्टस जैसी ही है। मुझे एक प्लाट मिल गया लिखने के लिये। मेरी कलम को मैने मना कर दिया इसकी बच्ची को कुछ नहीं होना चाहिए। जरा सी बीमार पड़ती मैं सचेत हो

जाता। मुझे नहीं चाहिए माली के जीवन का और अधिक दर्द भरा कथानक। उसका जीवन एक कैक्टस ही था, दिखने भर की एक बित्ता हरियाली। ज्यादा कांटे, सूखा पन, कोई महक नहीं बस केवल एक पुष्प खिला हुआ, उसके जीवन की यही परिभाषा है यही केक्टस उसके जीवन का प्रतिबिम्ब है।

इस बार होली के बाद मैने उसे नई नई वैराइटी के कैक्टस लगाने का फरमान दिया। उसने चकित आंखों से मेरी ओर देखा।

थोड़ी देर बाद वह लौटा तो बहुत सी तुलसी के पौधे लेकर आया था। और उसने पौधों को तत्काल ही तुलसी कोट और उसके नीचे क्यारी में लगा दिया।

मै भी यही चाहता हूं, जो मेरा माली चाहता है। प्रकृति इतनी क्रूर भी नहीं है। मेरी कलम 'चार्ल्स डारविन' को चिढ़ा रही है, माली की बच्ची का चेहरा मेरे सामने मुस्कुराने लगा । इस बार कैक्टस का फूल तुलसी में विकसित होकर रहेगा।

पसीजता ब्रह्माण्ड

फोन आया एक पच्चीस साल का लड़का आज भर्ती हुआ है। बेहद दुबला-पतला, सिर्फ आँखों से समझ आता है कि दीपक बुझा नहीं है। बिल्कुल अकेला है। नाम भी दीपक- किस घर का दीपक रहा होगा भगवान जाने।

पूरी चौबीस पसलियों का
जोर लगा कर कहता
तब समझ आता
पानी माँग रहा है।
किंचिन स्टाफ
कहता इसे प्यास
बहुत लगती है।
मैने सोचा प्यासा
ही तो जा रहा है

यह। माँ-बाप का कोई पता नहीं, किसी अस्पताल में कोई नवजात को छोड़ गया था। सरकारी चौकीदार के पैर दबाते-दबाते बड़ा हो गया। बीड़ी पी-पीकर चौकीदार भी मर गया और इसे भी विरासत में बीड़ी की आग पकड़ा गया। धुँआँ ही उसका साथी रिश्तेदार रहा। अंधकार मय जीवन उसके दीपक नाम की खिल्ली उड़ाता रहा होगा।

एक दिन राउण्ड लेते समय दीदी बोली ''कैसा जीवन है कि कोई रोने वाला भी नहीं है इसकी मौत पर?'' दीदी की इस बात पर मेरा साहित्यिक जिन्न फिलासफी की बोतल से बाहर निकल आया- ''ऐसा नहीं होता दीदी! प्रत्येक के लिए कोई न कोई रोने वाला भगवान जरूर बनाता है। फूल मुरझाता है तो तितली रोती है। सूरज डूबता है तो कमल उदास हो जाता है। हर मृत्यु के बाद ब्रह्माण्ड का कुछ अंश पसीजता है''

दीदी जानती हैं मैं जब इस तरह बात कर रहा

होता हूँ तो उसमें गंभीरता कम, दीदी की बात के विरोध की वृत्ति अधिक रहती है। मनोवैज्ञानिक मेरे इस भाव को 'सिबलिंग राइवलरी' कह सकते हैं। सब जानते हैं मैं अपनी बात मनवाने का कोई मौका नहीं छोड़ता हूँ।

उस दिन प्रार्थना हुई। हम सब बैठे थे कि ॐ शांति शांति... होते-होते दीपक बुझ गया। हम सब उसके पास गये। शांति पाठ किया, गंगाजल, तुलसी दल मुँह में देना एक मशीनी काम हो गया था अबतक। मैने मृत्यु प्रमाण पत्र पर चिड़िया बनाई। सीढ़ी से नीचे उतर रहा था कि सिसकियों की दबी आवाज मेरे कानों में आई, अंधेरे में छत पर कोई रो रहा था। परछाई से कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसका कोई रिश्तेदार आ गया है यह सोचकर मैने तसल्ली की, क्योंकि अब हमें इसकी अन्त्येष्ठि नहीं करना पड़ेगी।

फिर अचानक मैं दीदी को ढूँढ़ने लगा, ये

बताने के लिए कि इस दीपक के लिए भी कोई रोने वाला है। मैने यादव से पूछा- दीदी कहाँ हैं? जल्दी बुलाओ ऊपर भेजो, छत पर। मैं अपनी बात का प्रमाण देना चाहता था कि दीपक के लिए भी कोई रोने वाला है। जैसा मैने उनकी बात के विरोध में कहा था।

दीदी को फोन लगाया कोई उत्तर नहीं। सारा स्टाफ तलाश रहा था कहाँ है दीदी? मैने सीढ़ी चढ़ते हुए स्टाफ से कहा 'दीदी को छत पर भेज देना'। मैं टार्च लेकर छत पर इस आशा से जा रहा था कि दीपक का रिश्तेदार अब भी रो रहा होगा। छत पर गया।

''हे भगवान! दीदी बैठी थी छत की पट्टी पर'' मेरी बात पहली बार उन्होंने स्वयं प्रमाणित कर दी थी।

उत्सव

मेरी डायरी का आज का पन्ना उत्सव मना रहा है। बहुत खुश है। अन्य उदास पन्नों को गलबहियाँ लेकर नृत्य करना चाहता है। अखबार में एक छोटी सी खबर है। महिला चिकित्सक की फोटो है- वो अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करने वाली हैं।

बीता हुआ दुःख भी सुख के क्षणों में गुदगुदाता ही है- मैं आज चार वर्ष पूर्व का दृश्य याद कर रहा था। उस महिला चिकित्सक का पति मेरी ही अस्पताल का

चिकित्सक है, अस्पताल का अभिन्न अंग, मेरा अभिन्न मित्र भी। ओपीडी के बरामदे से उसकी सिसकियों की आवाज आ रही थी। हम दौड़कर गये। युवा दम्पत्ति पर गाज गिरी थी। मेरे मित्रों ने बताया कि एफ एन ए सी पाजिटिव आई है। चिकित्सा विज्ञान की ऐसी ही भाषा है – यहाँ पाजिटिव नहीं निगेटिव अच्छा माना जाता है। मैंने अपने मित्र को इतना दुखी कभी नहीं देखा था। वह कुम्हलाया, उजाड़ सा दिख रहा था।

हम सभी साथी उसके घर गये। दो-तीन घण्टे अपने सभी चिकित्सक मित्रों से परामर्श चला, उसका घर वार-रूम बन गया। लगा एक तूफान है जो तिनके से बने इस घरौंदे को नष्ट कर जायेगा।

फिर प्रारंभ हुआ कीमो, आपेरेशन, कीमो, रेडियेशन, फिर कीमो का दौर। मेरे मित्र की पत्नी एक योद्धा की तरह लड़ी। इस बीच कई बार उसे कार से आते-जाते देखता। सिर पर एक भी बाल नहीं, भौंहें नाम मात्र, चेहरा पीला किन्तु होंठों पर अभिवादन की

मुस्कान और आँखों में वही चमक। जब भी मिलती पूछती 'सर! आप कैसे हैं? आपकी तबीयत कैसी है?' इतना आत्मविश्वास कि मैं कभी नहीं पूछ पाता कि तुम कैसी हो? क्योंकि उसका उत्तर उसकी जीवन्त आँखों में मैं हमेशा पढ़ता- मुझे क्या हुआ है?

फेस बुक पर अपने स्टेटस में उसने मुस्कुराते हुए फोटो डाली – सिर पर एक भी बाल नहीं था और खुद ही कमेन्ट्स शेयर किया ''शाकाल खुश हुआ''। सैकड़ों लाइक्स मिले। सच में उसने कभी विग नहीं लगाया, ना ही स्कार्फ बांधा। परिस्थिति से बिन्दास लड़ती रही। उसमें मैने जिजीविषा के संघर्ष का विराट योद्धा होने की प्रवृत्ती देखी, जो नारी के सौन्दर्य की श्रृंगारिक अभिव्यक्ति के सहज एवं प्राकृत बोध से ऊपर थी।

धीरे-धीरे मेरा मित्र सहज होता गया। कभी केक लाता, कभी मिठाई और कभी प्रसाद। आज कीमो पूरी हो गई, आज स्केन निगेटिव आया, आज मेमोग्राफी

सोनोग्राफी नार्मल आई है आदि आदि। मैने इस युवा दम्पत्ति को युद्ध करते और जीतते हुए देखा है।

आज के इस समाचार पत्र में मुख पृष्ठ पर धोनी के धुरंधरों की गाथा छपी थी। किन्तु मेरे लिये पाँचवें पन्ने पर कोने में छपी यह फोटो और समाचार कहीं अधिक बड़ी विजय गाथा थी। अखबार विजय ध्वज बन गया था मेरे लिये, ये थी क्रूर प्रारब्ध पर विजय। वे दोनों ही नहीं आज पूरी मानव जाति जीत गई थी।

आगामी दिनों में... आगामी वर्षों में... मैं कई डायरी लिखूँगा- ईश्वर से प्रार्थना है इसी तरह की विजय गाथाओं से डायरी भरी रहे- तथास्तु! आमीन !! सो इट बी!!!

A write-up for magazine

INDIA Digest

U.K.

NEGATIVE SHADOW OF A POSITIVE BIOPSY

(A write-up for magazine INDIA DIGEST, U.K.)

In the language of medical science a positive biopsy of a suspected cancer patient is an extreme negative sentence. Relatives of patients conclude that Doctor has sentenced my patient to hang (of course in hospital) till death -

Dr P.V. Desai sr oncologist of Mumbai once commented - its either stage I or stage IV in India. There are no stage II or III clinically we detect here. Data and the scenario in India can't dare to contradict Dr Desai.

PRESENT SCENARIO- With a million of new cases reported every year, cancer seems to be tightening its grip on India. Dr Pankaj Chaturvedi (TMH) reported that 5 lacs people die of cancer every year in India. WHO said this number is expected to rise to 7 lacs by the end of 2015. Ignorance, lack of health education, High cost of treatment, inadequate facilities are adding to the horrible data year by year. Dr. Shyam ji Rawat onco- radiologist said "one and the only Govt institution of central India (in Jabalpur) registered 1800 patients last year which has gone up to

2500 this year". Health ministry data says 300 centres in India are catering the whole population and 600 more centres dedicated to work exclusively are required by 2020.

TOBACCO- Tobacco which is the biggest killer in India has yet to be banned with the health oriented govt policies. Dr Paul Goss of Harward medical centre reported that 35% adult population and 14.1 % of children are tobacco users in India.

DANGER SIGN- 70% of lives detected as cancer patient are snuffed out in the first year due to late detection.15% are young adult cancer patients in India against global 0.5%. There is no exclusive facility for terminally ill cancer patients in govt. or other hospitals as well.

Few scattered hospices are budding and working sporadically to cater a large no of needy patients. Even neither medical nor nursing curriculum is having a word oriented to deal such patients.

MOTIVATION- We in our Ashram had one unfortunate volunteer who developed Breast cancer and suffered a lot before the death. Looking to her sufferings and helpless situation, our Chairman Sadhvi Gyaneshwari Didi with all her team decided to have a centre exclusively dedicated in

care of terminally ill cancer patients. We started VIRAT HOSPICE in Jabalpur (CENTRAL INDIA) with 8 beds two years back with the idea to provide comfort, care, peace and dignity to them to face the killing disease. Sadhvi Gyaneshwari Didi said "We can not add days to their lives but definitely can add life to their days."

FACILITY- We decided to provide food, medicines, palliation, nursing care, spiritual boosting, prayers, Yoga etc as the part of hospice facility. Visits of oncologists, medical specialists, Pain Specialist are regular in care of all patients. We have Trained staff which provides care in a homely atmosphere. Hygienic kitchen works almost 24 hours for a better care. We hire ambulance for the need and requirement of patient for investigations and palliation. Patients go for picnic and out door visit often. (if their health permit). THESE ALL FACILITIES ARE FREE TO EVERY PATIENT.

MORE NEEDS- Once we entered into it we realized this is an endless field to work. We erected a temporary floor to provide more beds to the pouring in patients. Now we have 18 beds all occupied, and a big chain of such patients in que, whom we are trying to provide Hospice at Home services.

FAMILY MEMBERS- Family members are, we think, equally important to be taken care of. Stress to the caretakers and next of kin is very high. A diagnosis of cancer in pathology report is almost a death certificate for them. We counsel and try to prepare them for the worst. Some patients do have none to claim their corpse then hospice do cremate as their next of kin.

SOCIAL RESPONSE- Society has recognized this as an institution working for the genuine cause. Unexpected support of all classes of people is permeating more zeal into our work. Our hospice in Jan15 was visited by IAS trainees batch 2014 sent by Govt Of India as a part of their training. Distt. Magistrate Mr. Roopla contributed his awarded money to us.

Above all, asset of the public support to this genuine cause is so spirited that we are planning to have a much bigger structure with larger facilities with warmer bosoms to embrace these ever neglected dying souls. God bless all.

Dr. Akhilesh Gumashta
E-mail: gumashta.akhilesh@gmail.com

मुझे कभी-कभी ग्लानि होती थी कि मैं क्रांतिकारी राष्ट्रसंत **परम आराध्य ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा जी महाराज** से भेंट नहीं कर सका। फिर अचानक बोध हुआ इतने विशाल प्रकल्पों को प्राणवन्त करने वाले प्रणेता को तो उनके मार्ग पर निरंतर अनुसरण करने वाले पथगामी परिव्राजकों में सहज ही दृष्टिगोचर किया जा सकता है। प्रेरणास्पद एक सैकड़ा से अधिक उनकी पुस्तकों के आध्यात्मिक ऊर्जा से भरे शब्दों को पढ़ने पर प्रतीत होता है कि एक-एक शब्द हमारी अंगुली पकड़कर चल रहे हैं।

भारत की अटपटी तासीर है, उसका विकास जीडीपी, कलपुर्जों और कारखानों से निकलते धुँऐं से नहीं वरन् सम्पूर्ण भारत में बिखरे गुरूतत्व को संवरण कर प्रेम बोध और सेवा के भाव से करुणा के उद्घाटन के द्वारा ही संभव है।